Name of the College → APSM College Barauni
Name → Dr. Rajesh Kumar Suman
Designation → [GT] Date → 22.4.2021
Deptt → Economics
Class → B.A Part - II [H] Unit - 02
Paper → 3rd
Name of the topic → राष्ट्रीय आय [National Income]
→ [Net Domestic Product at Market Price] NDP

⇒ बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद → जब किसी वस्तु एवं सेवा का उत्पादन किया जाता है तो उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादन के साधनों का प्रयोग किया जाता है। उत्पादन प्रक्रिया के दौरान उत्पादन के साधनों के मूल्यों में कमी होती है। जिसे मूल्य ह्रास कहा जाता है। जब हम बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्य ह्रास को घटा देते हैं। तो बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद प्राप्त हो जाता है।

⇒ बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद → [NNP] → बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद से आशय किसी देश में एक वित्तीय वर्ष में उस देश के निवासियों द्वारा देश की घरेलू सीमा में एवं देश की सीमा के बाहर किये गये वस्तुओं एवं सेवाओं के अंतिम उत्पादन के मौद्रिक मूल्य से है। इसमें देश के निवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित आय को जोड़ लिया जाता है। इस अंतिम उत्पाद में मूल्य ह्रास की राशि को घटा लिया जाता है। इस अंतिम उत्पाद में मूल्य ह्रास की राशि को निकाल दिया जाता है।

⇒

⇒ बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद − मूल्य ह्रास [NNP = GNP − मूल्य ह्रास]

⇒ बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद = बाजार कीमत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद − विदेशों से प्राप्त निवल आय [NNP = NDP + विदेशों से प्राप्त आय

⇒ राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ -
[Methods of Measuring National Income]

⇒ किसी भी अर्थव्यवस्था में किसी निश्चित अवधि में कुल अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल उत्पादन का योग या उत्पादन का योग या उत्पादन प्रक्रिया में लगे हुए साधनों की प्राप्त आय का योग या उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं पर होने वाले व्यय का योग ही राष्ट्रीय आय है।

⇒ राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ
(i) उत्पादन विधि - [Product Method]
(ii) आय विधि → [Income Method]
(iii) व्यय विधि → [Expenditure Method]
(iv) सामाजिक लेखांकन विधि - [Social Accounting Method]

⇒ उत्पादन विधि ⇒ उत्पादन विधि अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन में उत्पादक इकाईयों के अंशदान की माप प्रस्तुत करता है। उत्पादन विधि के अंतर्गत एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का अंतिम मौद्रिक मूल्य ज्ञात कर लिया जाता है इसके योग को बाजार मूल्य पर आधारित सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है

2) आय विधि ⇒ उत्पादक इकाईयों में जो आय जनित होती है वह उत्पादन के साधनों के संयुक्त प्रयास का परिणाम है होती है यह आय वास्तव में उत्पादन क्रिया में लगे सभी साधनों - भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यमी के संयुक्त प्रयोग का प्रतिफल होती है जो इन्हें लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ के रूप वितरित हो जाती है। राष्ट्रीय आय का आकलन एक निश्चित वर्ष में एक वर्ष में

एक देश के सामान्य निवासी द्वारा अर्जित कारक आय के कुल जोड़ के रूप में किया जाता है। आय विधि के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न उद्यमों या संगठनों के कर्मचारियों को दिया गया पारिश्रमिक या प्रतिपूरक आय (नगद मजदूरी, एवं वेतन, किस्त के रूप में भुगतान, सामाजिक सुरक्षा में नियोजकों का योगदान एवं सेवानिवृत्त), प्रचालन-अधिशेष (लगान, ब्याज, लाभ,) मिश्रित आय को जोड़कर मूल्य वर्द्धन ज्ञात किया जाता है। इस विधि में किसी उत्पादक इकाई द्वारा उत्पादन के साधनों को किया गया आय भुगतान ही साधन लागत पर शुद्ध मूल्य वर्द्धन होगा। और जब इसे आर्थिक सीमा के भीतर उत्पादक इकाईयों के संबंध में आकलित किया जाए तो वह साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद होगा।

⇒ व्यय प्रणाली → एक वर्ष में अर्थव्यवस्था में होने वाले व्यय के कुल प्रवाह का योग किया जाता है।

⇒ चार वर्गों में कर सकते हैं

(i) → निजी अंतिम उपभोग व्यय (ii) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (iii) सकल घरेलू पूंजी निर्माण।

(iv) - निवल विदेशी निवेश।

⇒ सामाजिक लेखांकन विधि → इस विधि का प्रतिपादन कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री प्रो० रिचार्ड स्टोन द्वारा किया गया था। इस रीति में सम्पूर्ण समाज में लेन-देन करने वाले को विभिन्न वर्गों में बाँटा जाता है। ये वर्ग उत्पादक, व्यापारी, अन्तिम उपभोक्ता आदि के रूप में होते हैं। और यह रीति राष्ट्रीय आय की गणना की नवीनतम विधि है।

Scanned with CamScanner